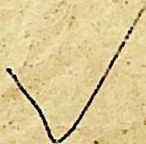


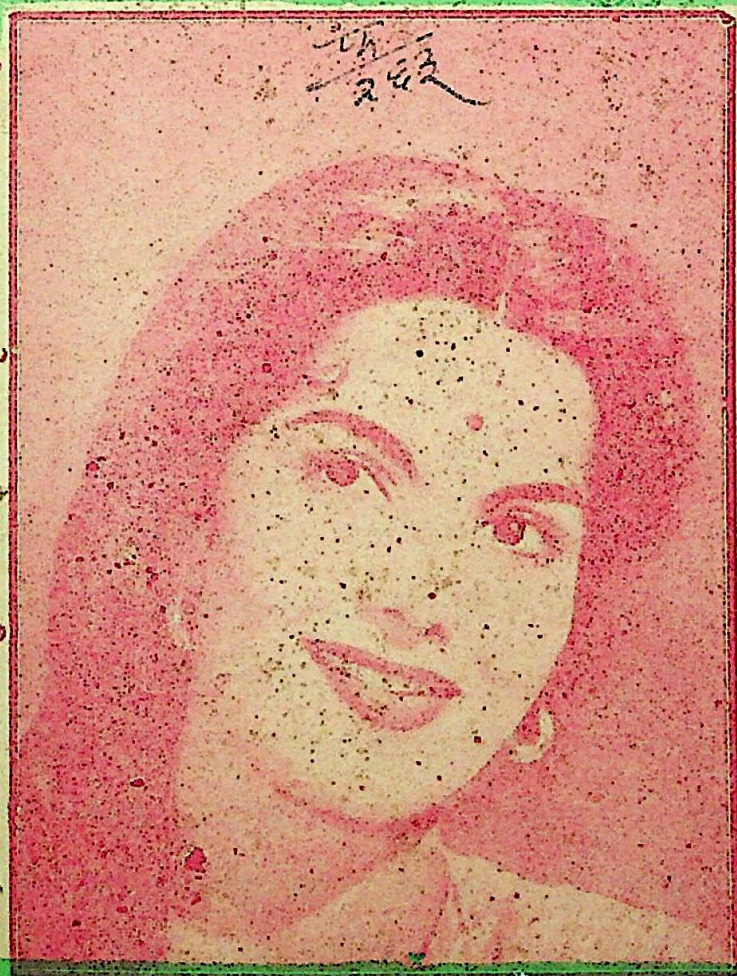
५५
३६३
२४

५५
३६४

५५
३६३



स्वप्न विचार



प्रकाशक-ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुक्सेलर,
४ आफिस-राजादरनाजा, ब्राह्म-कचौदीगली, बाराबसी । मू० ५)

❀ श्री: ❀

अथ स्वप्न विचार

❀ दोहा ❀

करि प्रणाम जगदीशको, बाणिहि पुनि शिरनाथ ।
टीका स्वप्न विचार की, भाषा करों बनाय ॥ १ ॥

१—प्रथम स्वप्न देखने का फल कहते हैं जिस कालमें पाँचों कर्मेन्द्रियाँ पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ और मन ये अपनी २ क्रिया नहीं करते और नाना प्रकार का ज्ञान भी नष्ट हो जाता है वही स्वप्न का काल है । उस काल में जो नाना प्रकार का गन्धर्व नगराकार दिखाई देता है । उसको मैंने स्वप्न देखा, ऐसा व्यवहार करते हैं ।

२-स्वप्न दो प्रकार का है एक इष्ट फल को जनाने वाला, दूसरा दुष्ट फल को जनाने वाला । पहिले सब सामान्य इष्ट फल बोधक स्वप्न का वर्णन करते हैं । किसी नदी अथवा समुद्र में तैरना, आकाश में उड़ना, सूर्योदय, प्रज्वलित आग, सूर्य आदि ग्रह, अश्विनी नक्षत्र-ध्रुवादिक तारा देखना, बड़े-महलों, देवग्रह और शिवालय इत्यादि के शिखर पर चढ़ना आदि जिसको स्वप्न में दिखाई देता है इससे कार्य सिद्धि होती है ये स्वप्न कल्याण कारक हैं ।

३-स्वप्न में मद्य का पीना, चरबी मांस और कीड़ों का खाना अथवा उनका शरीर में लगना और शरीर में विष्टा का लेपन होना, देह में लोह का लगना, दही भात खाना, श्वेत चन्दन का लगना नाना प्रकार का श्वेत अलङ्कार पहिरना अथवा पहिरे हुए मनुष्य को देखना, यह सब देखने वाला पुरुष धन्य कहलाता है और इष्ट का लाभ होता है ।

४-स्वप्न में देवता, ब्राह्मण, चन्द्रमा, वज्र भूमि, काल, राजा, श्वेत कलश, वस्त्र, अच्छे अच्छे अलङ्कार से अलंकृत स्त्री, बैल, हिमांचलादि पर्वत और दुग्ध देखना, बटादिक वृक्ष तथा फल सहित वृक्षों पर चढ़ना और ऐना मांस, फूल माला आदिक मिलना, अगाध जल में तैरना यह सब चीज देखने से 'द्रव्य' लाभ होता है । यदि देह में रोग हो तो रोग भी दूर हो जाता है ।

५-अब सब सामान्य दुष्ट फल जनाने वाला स्वप्न कहते हैं स्वप्न में यज्ञ के खम्भे बाल्मीक और नीमके पेड़ पर चढ़ना, तेल, कपास, रुई, लोहा का मिलना स्वप्न में क्रीड़ा करना, लाल कपड़ा पहिनना या ओढ़ना, नदों को काटकर दूसरे रास्ते से ले जाना, पकाया हुआ मांस भोजन करना, यह सब देखने से विपत्ति प्राप्त होती है ।

६-शुभाशुभ भेद से दो प्रकार का जो स्वप्न है

उसीका पहर भेद करके शुभाशुभ फल भेद कहते हैं। रात के पहिले पहर जो स्वप्न देखे तो एक वर्ष में शुभ अथवा अशुभ फल होता है, द्वितीय पहर में देखे तो आठ महीने में, तृतीय पहर में देखे तो तीन महीने में, और पिछली बड़ी रात रहते देखे तो दस दिन में, विसर्जन बेला (प्रातः काल में) स्वप्न देखे तो तत्काल फल होता है।

७-अब विशेष अभीष्ट फल को देने वाले स्वप्न को कहते हैं। जो स्वप्न में राज, हाथी, घोड़ा, बैल इत्यादि वस्तुको देखता है उसके कुटुम्ब की वृद्धि सम्भक्ता चाहिये।

८-जो पुरुष गौ, बैल, हाथी, शिवाल्लय पर्वत के शिखर, वृक्ष इत्यादि पर चढ़ना, सर्वाङ्ग विष्टाका लगाना, रोना, मरना और जा स्त्री मिलने के योग्य नहीं उस स्त्री से सङ्गम करना स्वप्न में देखता है सो धन्य कहलाता है।

६-स्वप्नमें दुग्ध देखने से, बटादिके तथा फल सहित वृक्षों पर अकेले चढ़ जानेके साथ ही जाग जाने वाले को जल्दी लाभ होना है ।

१०-स्वप्न में जो पुरुष दाहिने हाथ में सर्प को काटते हुए देखता है उसको दश दिन के भीतर ही हजारों रुपये का लाभ होता है ।

११-स्वप्नमें जो पुरुष जल के भीतर डूबता है अथवा उसको बिच्छू काटता है उसको जय, मनोरथ की सिद्धि और पुत्र की प्राप्ति होती है ।

१२-स्वप्नमें कोठा अथवा पर्वतके ऊपर चढ़कर समुद्र पार जाय तो यदि वह शूद्र कुलमें भी पैदा हुआ हो तो भी निसन्देह राज्य पद को प्राप्त होता है ।

१३-जो पुरुष तालाब के समूचे कमलपत्रमें घृतक्षीर का भोजन करे उसे सार्वभौम राजा होना चाहिये ।

१४-बकुला, मुर्गी तथा कौब पक्षी को स्वप्न

में देखते हुए जाग उठे तो उत्तम कुल की मधुर भाषणी कन्या उसकी भार्या होती है ।

१५ जो पुरुष स्वप्न में अपने हाथों व पावों में जल्लोर पड़ी हुई देखता है उसको पुत्र अथवा धन जल्दी मिलता है इसमें सन्देह नहीं ।

१६—जो नर स्वप्नमें अपना आसन, बिछौना, पालकी और अपनी देह गाड़ी इका आदि को चलते हुए देखे तो उसकी चारों ओर से लक्ष्मी प्राप्त हो ।

१७—जो स्वप्न में सूर्य मण्डल को देखता है उसके रोग दूर हो जाते हैं, यदि रोग न होता लक्ष्मी प्राप्त हो ।

१८—जो नर स्वप्न में लोह व मद्य पीता है यदि वह ब्राह्मण हो तो विद्या और क्षत्रिय आदि हो तो उसको धन प्राप्त हो ।

१९—जो स्वप्न में श्वेत वस्त्र पहिने हुए उत्तम स्त्री अपने को नहलाती हुई दिखाई दे तो लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

२०-जो स्वप्न में लड़ाई, जोड़ा वस्त्र, अन्धरी धार की तलवार मिले और उसी समय जाग उठे तो उत्तम अन्न की प्राप्ति होती है ।

२१-जो स्वप्नमें बैल के रथमें अकेला बैठे और हतने में जाग उठे तो उसको बहुत धन प्राप्त होगा ।

२२-जो स्वप्न में दही मिले तो द्रव्य और धी मिले तो यश प्राप्त हो । यदि धी भक्षण करे तो दुःख हा, दही भक्षण करे तो यश प्राप्ति हो ।

२३-जो स्वप्न में मनुष्य के पैर का मांस भक्षण करे तो शतरूपया अथवा शत सुवर्ण सिका लाभ हो । जो मनुष्यके बाहुका मांस भक्षण करे तो सहस्र रूपया या सोना लाभ हो, जो सिर का मांस भक्षण करे तो राज्य मिले वा हजारों रुपये मिले ।

२४-स्वप्न में जितनी वस्तु श्वेत है सो मिले अथवा देखे तो अति शुभ फल होता है । परन्तु

कपास, भस्म, तक्र और भात ये अशुभ हैं । इससे जितनी काली वस्तु हैं जो स्वप्न में मिले व देखे तो अति निन्दित है । इसका बुरा फल होता है परन्तु गौ हाथी देवता ब्राह्मण और घोड़ा शुभ है ।

२५—जो स्वप्न में फेन के सहित दूध दूहने के बाद पीता है उसका सोमपान एवं अमृत पान होता है और वह नाना प्रकार के उत्तम ऐश्वर्य का भोग करता है ।

२६—जो स्वप्नमें दही देखे तो प्रीति हो । गेहूँ देखे तो धन मिले और जव देखे तो यश प्राप्त हो ।

२७—यदि स्वप्नमें पान का बीड़ा, कपूर, अगर, श्वेत चन्दन, श्वेत फूल ये वस्तु मिलें तो चारों तरफ से सम्पत्ति प्राप्त हो ।

२८—विशेष करके शुभ फल बोधक स्वप्न कहकर अशुभ फल को जनाने वाले स्वप्न को कहते हैं उसे

सुनो । उसमें शौनक ऋषिके वचन कहते हैं ।

२९-जो स्वप्न में सूर्य चन्द्र को निस्तैज और अश्विन्यादिक नक्षत्र ध्रुवादिक तारों का गिरना देखे तो मनुष्य मरण अथवा शोक को प्राप्त हो ।

३०-स्वप्न में जो मनुष्य अशोक कनेर तथा पलास का वृक्ष देखे या फल लगे हुए वृक्ष देखे तो उसको शोक प्राप्त हो ।

३१-जो स्वप्न में नाव पर बैठकर नदी पार उतर जाता है उसको परदेश जाना होता है पर उस परदेश से जल्दी लौट आता है ।

३२-जो स्वप्न में लाल वस्त्र पहिने तथा लाल चन्दन लगाये हुए स्त्री को अपने को नहलाती हुई अथवा उसे स्नान करती हुई देखे तो मृत्यु प्राप्त हो ।

३३-जो पुरुष स्वप्न में तेल, दूध, घी और

दही इत्यादिक पदार्थ को अपने सर्वाङ्ग में लगाते हुए देखे तो उसको अवश्य रोग हो ।

३४-स्वप्न में अपने सम्पूर्ण केश गलके गिर पड़ें अथवा दाँत गिरें तो नाश हो, पुत्र हो तो पुत्र नाश हो ।

३५-जो पुरुष स्वप्नमें गदहा, ऊँट और महिष के रथ में बैठा हुआ जाग उठता है उसका मरण हो अथवा महा रोग को प्राप्त हो ।

३६-जो स्वप्न में अपना कान, नाक हाथ आदि को कोई काट डाले तथा स्वयं कीच में फँस जावे, दाँत केश गिर पड़ें, भुना हुआ मांस खाव गदहे ऊँट वा भैंस पर बैठा हुआ अपने को देखे या सर्वाङ्ग में खून तेल लगाये हुए देखे तो मरण तुल्य बीमारी हो । इस प्रकार से सोते हुए स्वप्न का फल कहा है ।

३७—अब जागते ही जो अशुभ सूचक चिह्न दिखाई देते हैं वे कहे जाते हैं। कश्यपादि सप्त ऋषियों की पत्नी अरु वती, ध्रुव, तीन पद विष्णु के और मातृ मंडल की आकाश में जो पुरुष वा स्त्री नहीं देखे उसको गतायुष समझना।

३८—अपनी देह में जो जीम है अरुन्धती, नासिका का अग्र भाग ध्रुव और मृकुटी का मध्य मातृ मंडल है। इनको जो देखता उसकी पूर्ण आयु और जो नहीं देखता उसकी स्वल्प आयु जाननी चाहिये।

३९—जिसको अपने कान में अँगुली डालने से शब्द सुनाई नहीं देता, आकाश गङ्गा में शब्द हाने से सुनाई नहीं देता और चन्द्रोदय होने से चन्द्रिका नजर नहीं आती उसकी भी स्वल्पायु ही समझना।

४०—जिसका पैर धूल या कीच में देने से साफ साफ उठ न आवे आगे से वा पीछे से खंडित नजर आवे तो वह आठ महीने के भीतर ही मरेगा ।

४१—अब दृष्ट स्वप्न की शांति कहते हैं । जिससे उसको दुःख न हो । नष्ट स्वप्नों के निवारणार्थ स्वप्न का जो कराल देवता है उसका पूजन, जप, होम तथा ब्राह्मण भोजन कराने से शुभ फल होगा इसलिये यह अवश्य कराना चाहिये । जो आचार मयूष ग्रंथ में तथा रात्रि सूक्त के कल्प में है उसी अनुसार करना चाहिये । यहाँ वर्णन करने ले ग्रंथ बहुत बड़ा हो जाता इसलिये नहीं लिखा और भी भौंति, मयूष शांति कमलाकर ग्रन्थ में देख लेना । यहाँ थोड़ा सा शांतिकरण लिख देते हैं ।

४२—अपनी शाखा में जैसे अग्नि स्थापना होती हो उसी तरह से अग्नि स्थापना करके रात्रि

में कालरात्रि के मंत्र से घृत और क्षीरका होम
अवश्य करना चाहिये शूद्रादिकों का लौकिकादि
महा हवन करना उचित है । ऋग्वेद में, रात्रि
व्याख्यादायिनी इत्यादिक प्रत्येक ऋचा से अष्टोत्तर
शत (एक सौ आठ) आहुति देना अथवा ब्राह्मण
द्वारा दिलवाना चाहिये ।

४३-होम के अनन्तर जो स्विष्ट कृत आहुति
होती है उसको देके होम समाप्त करना और ग्रह
यज्ञ में जो अभिषेक होता है उसका फिर गुरु को
यथाशक्ति दक्षिणा भी न दे सके तो उसी काल
में यथा सामर्थ्य सोना देने से सब कामना पूर्ण
होगी । घट के ऊपर जो प्रतिमा आदि स्थापित
किये हों सो होमकर्ता ब्राह्मण को देना चाहिये ।
स्वप्न का नियम ।

-४४-स्वप्न सबसे न कहना, अपने गुरुअथवा

उत्तम ब्राह्मण से कहना चाहिये । उत्तम स्वप्न देखने के बाद नींद नहीं लेना चाहिये, क्योंकि सो जाने पर फल नहीं होता । दुष्ट स्वप्न देखने के पीछे अवश्य सोना चाहिये जिसमें दुष्ट फल न हो । स्त्री, बालक, अथवा नीच जति से स्वप्न कभी नहीं कहना चाहिये ।

* इति *

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,

घर—राजादरवाजा, ब्रांच—कचौड़ीगली, वाराणसी ।

मुद्रक—ठाकुर प्रसाद एण्ड सन्स, मन्वई प्रेस, राजादरवाजा वाराणसी ।

हमारे यहाँ से नीचे लिखी पुस्तकें— एक बार अवश्य मँगाकर लाभ उठावें ।

मोती का पेड़	॥)	कोकशास्त्र बड़ा सचित्र	३)
क्रिस्ता हातिमताई बड़ा	१।)	कबीर साहब का बीजक मूल	१।)
रानी द्रौपदी की कहानी	।—)	बृहद् बृट्टीप्रचार बैद्यक सचित्र	३)
रूपतारा	।—)	भरघरी चरित्र बड़ा ६ खंड	॥।)
देव कुमारी	।—)	रूप कुमारी	॥)
चैतान पचीसी	॥।)	दगावाज सन्त्री	॥)
छली खौदागर	।—)	दैत्य राजकुमार	॥)
पाण्डव द्रौपदी वनवास	॥)	केशर कुमारी	॥)
कुँवर विजई ३२ भाग	३)	उत्पाती कुमार	॥)
रावेश्याम रामायण रक्त	३)	खोने का पहाड़	॥)
लोरिकायन बड़ा	२)	भूत की बेटी	॥)
लखिया रानी का गीत	॥—)	नारी-धर्म-विधान	३)
कुँवर घुघुलिया का गीत	१॥।)	सिंहासन बत्तीसी	१)
गुलबकावली ४ भाग	॥।)	खोरठी वृजाभार ३२ भाग	३)
महाभारत भाषा गुटका	५)	तोला मेंना आठो भाग	२)
रामायण मध्यम मूल	६)	प्रभाकर हिन्दी शब्दकोष	६)
महाभारत सबलसिंह १२५वर्ष	॥—)	वृजबिलास सजिन्द	८)
पाण्डव द्रौपदी वनवास	॥)	विश्राम सागर ग्लेज	६)

हर प्रकार की पुस्तक मिलने का पता—

ठाकुरप्रसाद एण्ड सन्स बुकसेलर,
राबादरवाजा, ब्राह्म-कचौड़ीगली,
वाराणसी ।

बम्बई प्रेस वाराणसी ।

